



જૂન 2022



लक्ष्य

तक पहुँचने के लिए प्यास के साथ दौड़ें

प्रस्तावना

प्यारे युवाओं को प्यार भरा अभिवादन!

अनीता कुमारी जो एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखती हैं, उनका जन्म झारखंड के ओर मांझी गांव में हुआ था। उसने एक लक्ष्य निर्धारित किया और उसे प्राप्त करने के लिए अपना पूरा ध्यान केंद्रित किया। अनीता कुमारी फुटबॉल मैच में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से एक बन कर उभरी हैं। इसके अलावा, पारिवारिक गरीबी। समाज में बदनामी की बातें और यहाँ तक कि संघर्षों और कष्टों के बीच भी, उन्होंने अपनी उपलब्धियों के लिए लगातार जोश के साथ संघर्ष किया और कई पदक जीते। आज, उन्हें महिलाओं के लिए अंडर 17 फीफा विश्वकप मैच के लिए चुनी गयी थी। एक गरीब परिवार में जन्म लेने के बावजूद, बिना भोजन के एक झोपड़ी में रहने के बावजूद, उसने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अथक प्रयास किया अनीता कुमारी भारत का नाम ऊंचा करने के लिए अग्रसर है। जैसे-जैसे वह अपने लक्ष्य की ओर लगातार दौड़ती गई, उसने पूरे भारत को पीछे मुड़कर देखने के लिए मजबूर कर दिया। प्यारे नौजवानों, आप उठ सकते हैं, चाहे आप कितनी भी बार गिरें। यदि आपका लक्ष्य यीशु है और आप उसकी ओर दौड़ते हैं, तो इस से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके रास्ते में कितनी भी बाधाएँ आती हैं। यीशु, आपको स्वयं पूर्ण, स्थापित, मजबूत और व्यवस्थित करेगा। अपनी असफलताओं से निराश न हों।

“बाधाओं को दूर करने के लिए साहसी बनो”

“दुखों को सहने के लिए साहसी बनो”

जब ये युवा जो वर्कआउट करके और उन्हें हासिल करने की कोशिश कर वर्ल्डकप के लिए अपनी जान देने को तैयार हैं। स्वर्ग से उतरे और अपना जीवन देने वाले यीशु के प्रेम को व्यक्त करना आपका कर्तव्य और लक्ष्य है।

“यदि आपका लक्ष्य यीशु है, तो नुकसान होने पर भी यीशु को अंत तक घोषित करना आपकी खुशी हो सकती है”

मसीह के काम में

अविनाश

दौड़े

बिना रुके





आइए प्रार्थना करें और जीते!

पिछले कुछ महीनों में हमने प्रार्थना के प्रकारों के बारे में बहुत सी बातें देखी हैं। उसी के अनुसार, हमें प्रभु पर भरोसा है कि आप सभी ने अपने आप को प्रार्थना के लिए समर्पित कर दिया है। सभी ने अपने आप को प्रार्थना के लिए समर्पित कर दिया है। उपस्थिति में कम से कम एक घंटे तक प्रार्थना करने में सक्षम नहीं हैं और प्रार्थना करने के लिए उत्सुक हैं, तो यह खंड आपके लिए है। एक घंटे की प्रार्थना कैसे करें? हमें प्रार्थना क्यों करनी चाहिए? पाँच मिनट में मैंने सभी चीजों के लिए प्रार्थना करना समाप्त कर दिया है। मैं एक घंटे की प्रार्थना कैसे करने जा रहा हूँ? क्या आप अज़माया जाए। साथ ही, हम आपको प्रोत्साहित करते हैं कि दिन के पहले घंटे की शुरुआत प्रभु की उपस्थिति में करें, सुबह की प्रार्थना सबसे अच्छी है।

तैयारी

पिछले दिन की तैयारी

◀ किसी भी प्रयास के लिए तैयारी आवश्यक है। सुबह की प्रार्थना से एक रात पहले, आपको अपने मन और शरीर को तैयार करने की आवश्यकता होती है, आपको रात में समय बर्बाद किए बिना अपने शरीर को आराम देने की आवश्यकता होती है। (जल्दी सोएँ जल्दी जागें)।

◀ तय करें कि किस समय सुबह जल्दी उठें और प्रार्थना करें, “यीशु, सुबह जल्दी उठने में मेरी मदद करें और प्रार्थना करें...” यदि संभव हो तो अलार्म सेट करें और बिस्तर पर जाएं।

सुबह जल्दी उठने के बाद की जाने वाली तैयारी

◀ उठते ही बिस्तर पर घुटना न टेकें। बिस्तर से उठना पहली चीज है जो हमें करने की ज़रूरत है।

*अपने दाँत ब्रश करो, अपना चेहरा धोओ और तैयार हो जाओ। क्योंकि, यह कभी न भूलें कि आप एक साधारण सांसारिक व्यक्ति से नहीं, बल्कि उस सर्वशक्तिमान ईश्वर से मिलने जा रहे हैं, जिसने अपने एक शब्द से पूरे ब्रह्मांड की रचना की।

◀ नियमित प्रार्थना के लिए एक कमरा या एक कोना अलग रखें और प्रतिदिन उसी स्थान पर प्रार्थना करने का अभ्यास करें।

◀ इससे पहले कि आप सुबह प्रार्थना करना शुरू करें, आपका बाईबल निश्चित रूप से आपके पास होना चाहिए। इसका कारण यह है कि प्रार्थना के दौरान आप न केवल प्रभु से बात करते हैं, बल्कि आपको प्रभु को आपसे बात करने के लिए स्थान देना चाहिए।

एक घंटे की आराधना कैसे करें?

एक घंटे की प्रार्थना के समय को तीन भागों में विभाजित करें। पहले 15 मिनट: स्तुति करो और धन्यवाद दो, अगले 15 मिनट: बाईबल का ध्यान करो! अगले 30 मिनट: प्रार्थना करो!

इसलिए सुबह जल्दी उठकर प्रार्थना करने के लिए आवश्यक तैयारी करने का प्रयास करें। परमपिता परमात्मा के साथ संबंध रखें जो आज भी जीवित हैं

बहन श्री लक्ष्मी के साथ एक इंटरव्यू, जो एक ऐसे परिवार में पैदा हुई
जो मसीह को नहीं जानता था,
जो परमेश्वर के प्रेम से बचाई गई थी, और जिसने आज अपने सपने
और अपनी महत्वाकांक्षा को त्याग दिया है
और परमेश्वर की इच्छा पर काम कर रही है।

हमें अपने बचपन के बारे में
बताएं- मैं कोडंडारमन और
मोहनवादिवु की दूसरी संतान के रूप में पैदा हुई
थी। मेरा एक भाई है जिसका नाम हरीश है।
वह एक डिजाइनिंग इंजीनियर के रूप में काम करता है।
जब मैं दूसरी कक्षा में थी, तब मेरी माँ ने मसीह को जान लिया था।
मेरी माता ने मेरी परवरिश वचन अनुसार की।
मुझे प्रभु के प्रेम के बारे में बहुत कुछ सिखाया गया। लेकिन मुझे उद्धार
का अनुभव नहीं था।

**माँ ने तुम्हें प्रभु तक पहुँचाया, बचपन से आपकी पढ़ाई कैसी
रही है?**

मैं बचपन से ही अच्छी पढ़ाई कर रही हूँ। लेकिन मैं कितनी भी कोशिश
कर लूँ, मैं 500 में से 490 से ज्यादा अंक हासिल नहीं कर पाती थी।
मेरी माँ के एक दोस्त ने मुझे से कहा कि तुम जो कुछ भी परमेश्वर से
मांगोगे, वह तुम्हारे लिए करेगा। उस समय
मैं नौवीं कक्षा की तैमासिक परीक्षा से गुजर
रही थी। उस दिन से मैं प्रतिदिन प्रार्थना
करने और वचन पढ़ने लगी कि यहूवा
मुझे बुद्धि देगा। परमेश्वर ने मुझे 500 में
से 500 अंक प्राप्त करने और प्रथम स्थान
प्राप्त करने में मदद की। तब मुझे एहसास
हुआ कि मेरा परमेश्वर कितन शक्तिशाली
और गौरवशाली परमेश्वर है। उस दिन मैंने यीशु को अपने जीवन में
उद्धार कर्ता के रूप में स्वीकार किया और अपन जीवन प्रभु को समर्पित
कर दिया। प्रभु ने मेरी 10वीं में 494/500 प्राप्त करने में मदद की।



**उत्तम, आपने 10 वीं कक्षा की परीक्षा अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण
की..... इसी तरह, क्या आप पढ़ाई में उत्कृष्टता जारी रखने में
सक्षम हैं?**

जब मैं सेकेंड क्लास में थी तो शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने
के कारण मैं बहुत कमजोर थी। लगातार कमजोरियके कारण मैं अपनी

परमेश्वर के लिए

जुनून

पढ़ाई पर ठीक से ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा थी। एक दिन मेरे शिक्षक
ने मुझसे पूछा, “तुम बहुत कमजोर हो, क्या तुम परीक्षा लिख पाओगी?”
तब तक बिना किसी भय के रहने के कारण इस प्रश्न को सुनकर मेरे मन
में एक बड़ा भय उत्पन्न हो गया। मुझे बहुत डर था कि मैं परीक्षा नहीं

लिख पाऊंगी। तभी मुझे पता चला कि कोयंबटूर में
अचीवर्स की बैठक हो रहे हैं और मैं भी उसमें शामिल
हुई। प्रभु ने न केवल मुझे मेरे सभी भयों से मुक्त
किया है, बल्कि उन्होंने मेरी कमजोरी को भी पूरी तरह
से बदल दिया है। उसके बाद, प्रभु ने मुझे अच्छी तरह
से अध्ययन करने और परीक्षा लिखने और गणित में
1159/1200 अंक और 200/200 अंक प्राप्त करने
में मदद की।

**उत्तम, आपकी कमजोरी में प्रभु आपके साथ थे... आपने हायर
सेकेंडरी स्कूल भी पढ़ा... क्या आप मुझे अपने कॉलेज लाइफ
के बारे में बताना जारी रख सकते हैं?**

मैं प्रार्थना कर रही थी कि किस कॉलेज में पढ़ाई करूं और किस कोर्स
को लूँ। मेरी इच्छा थी कि CMC कॉलेज में मेडिसिन की पढ़ाई करूं,
डॉक्टर बनूँ और प्रभु की सेवा करूँ।

उस साल एक कानून बनाया गया था कि नीट की परीक्षा पास होने पर ही मेडिकल कॉलेज में दाखिला मिल सकता है। प्रभु ने मुझे NEET परीक्षा के लिए अच्छी तरह से अध्ययन करने और परीक्षा लिखने में मदद की। चूंकि उस वर्ष चिकित्सा परामर्श में देरी हुई, इसलिए मैंने अपने माता-पिता की सलाह पर कृषि अध्ययन के लिए आवेदन



आपको अभिषेक मिला है। उसके बाद क्या आपने यहोवा के लिए कुछ किया?

मैं यहोवा के लिए कुछ करना चाहती थी। लेकिन मैं नहीं कर सकी। और उस समय 2021 में इग्नितर्स कैम में भाग लेने में

परमेश्वर ने मेरी मदद की, और परमेश्वर ने मेरे आध्यात्मिक जीवन में देखी गई सारी थकान को दूर कर दिया। मैंने सीखा कि कैसे बुद्धिमानी और जोश के साथ सुसमाचार बोलना है। परमेश्वर किसी भी परिस्थिति में उसके लिए जोश में खड़े होने में हमारी मदद कर रहा है। परमेश्वर मेरे मित्रों को सुसमाचार का प्रचार करने और लोगो को उद्धार की ओर ले जाने का अनुग्रह देता है। गांव की सेवा में परमेश्वर ने भी मेरी मदद की। सुसमाचार का प्रचार करने के कारण मुझे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं अपनी नौकरी खो देती हूँ मैंने उत्साह से सुसमाचार की घोषणा करते हुए कहा कि मैं सुसमाचार का प्रचार करना बंद नहीं करूँगी। मेरी नौकरी चली गई। परन्तु आज परमेश्वर मुझे अपनी इच्छा के अनुसार अपने सेवक के रूप में उपयोग कर रहा है। जितना मैंने सोचा और अनुरोध किया, उससे कहीं अधिक वह मुझे आशीर्वाद और मार्गदर्शन दे रहा है।

यह जानते हुए कि मैंने प्रभु की इच्छा के प्रति समर्पण नहीं किया, यह प्रभु को दुखी करेगा, और अंत में मैंने अपना चिकित्सा सपना छोड़ दिया और प्रभु की इच्छा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। पहले तो बहुत मुश्किल था। अपने लिए अपनी योजना को भूलकर, मैं यीशु से यह कहते हुए प्रार्थना करने लगी, “कृपया मुझे अपने आप को पूरी तरह से आपके आत्मसमर्पण करने की कृपा दें।” प्रभु ने मुझे अनुग्रह दिया। मैंने अपने आप को पूरी तरह से प्रभु की इच्छा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। परमेश्वर ने मुझे उसकी इच्छा के अनुसार पाठ्यक्रम को अच्छी तरह से पूरा करने में मदद की। परमेश्वर ने मेरे कॉलेज में परमेश्वर के लिए एक पवित्र और उत्साही जीवन जीने में मेरी मदद की।

ठीक है... आपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कृषि में अपनी पढ़ाई पूरी की है... अपने उद्धार के अनुभव के बारे में बताएं?

जब मैं दसवीं कक्षा में थी तब मैंने यीशु को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। उसके बाद, मैं यहोवा से अभिषिक्त होने के लिए प्रार्थना कर रही थी। उन दिनों मैं ज्यादा से ज्यादा फिल्में देखा करती थी। परमेश्वर ने मुझे कहा, “आपने सिनेमा को प्राथमिकता दी है और इसे महत्व दिया है। जब आपका दिल इससे भरा है तो मैं आपके भीतर कैसे रह सकता हूँ?” तमाम कोशिशों के बाद भी मैं फिल्में देखना बंद नहीं कर पाई। मैंने खुद को आत्मसमर्पण कर दिया और प्रार्थना करी कि केवल यीशु ही मुझे इस पाप से मुक्त कर सकत हैं। परमेश्वर ने चमत्कारिक रूप से मुझे इस पाप से मुक्त किया और मेरा अभिषिक्त किया।

परमेश्वर ने मेरी मदद की, और परमेश्वर ने मेरे आध्यात्मिक जीवन में देखी गई सारी थकान को दूर कर दिया। मैंने सीखा कि कैसे बुद्धिमानी और जोश के साथ सुसमाचार बोलना है। परमेश्वर किसी भी परिस्थिति में उसके लिए जोश में खड़े होने में हमारी मदद कर रहा है। परमेश्वर मेरे मित्रों को सुसमाचार का प्रचार करने और लोगो को उद्धार की ओर ले जाने का अनुग्रह देता है। गांव की सेवा में परमेश्वर ने भी मेरी मदद की। सुसमाचार का प्रचार करने के कारण मुझे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं अपनी नौकरी खो देती हूँ मैंने उत्साह से सुसमाचार की घोषणा करते हुए कहा कि मैं सुसमाचार का प्रचार करना बंद नहीं करूँगी। मेरी नौकरी चली गई। परन्तु आज परमेश्वर मुझे अपनी इच्छा के अनुसार अपने सेवक के रूप में उपयोग कर रहा है। जितना मैंने सोचा और अनुरोध किया, उससे कहीं अधिक वह मुझे आशीर्वाद और मार्गदर्शन दे रहा है।

आप युवाओं से क्या कहना चाहते हैं?

जब हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, जो हमारी सोच और माँग से अधिक करता है, और उसकी इच्छा के अधीन होता है, तो वह स्वयं हमारे पिता होगा और सभी चीजों को पूरा करेगा। प्रभु ने कहा है: “आपके विचार मेरे विचार नहीं हैं।” जी हाँ, जितना हम सोचते हैं, उससे कहीं अधिक परमेश्वर हमारे बारे में सोचता है। इसलिए चाहे पढ़ाई हो, काम हो या शादी, परमेश्वर से पूछो और उनकी इच्छा के अधीन रहे। वह तुम्हारे लिए रास्ता तैयार करेगा।

प्रिय युवाओं! अगर प्रभु प्रिय बहन श्री लक्ष्मी से बात कर सकता है, तो वह भी आज आपसे बात करेगा। लेकिन आपको उसकी उपस्थिति में प्रतीक्षा करनी होगी और उसकी इच्छा के अधीन होना होगा। कभी-कभी आपको अपने सपनों को खोना होगा। जब आप प्रभु के लिए कुछ नुकसान का सामना करते हैं, तो प्रभु आपके जीवन के सपनों को कई गुना आशीर्वाद देगा।





असमंजस में ज्योति

मैंने अपनी 12वीं की सार्वजनिक परीक्षा लिखी है। जब मैं 8वीं कक्षा में थी। मुझे एक लड़के से प्यार हो गया जो कॉलेज में था। उसने यह भी कहा कि वह मुझसे प्यार करता है। वह मुझसे बहुत प्यार करता है और मुझसे वादा किया था कि वह मेरी अच्छी तरह से देखभाल करेगा। मैं उससे शादी करना चाहती थी। पिछले 5 सालों में मैंने उसके प्यार में कोई अंतर नहीं पाया। इसलिए, मैंने उससे शादी करने का फैसला किया। इसके अलावा, मेरे पिताजी एक शराबी हैं। वह मुझे और मेरी मां को रोज परेशान करते थे। मुझे लगता है कि मेरी शादी ही इस नरक से बचने का एकमात्र उपाय है। हालांकि मेरा सपना एक मुखिया-मालकिन बनने का है, लेकिन लगता है कि इस पीड़ा से बाहर निकलने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। मुझे लगता है कि मेरा फैसला सही है। और दूसरी तरफ मैं भयभीत और भ्रमित हूँ। - ज्योति, तिरुनेलवेली।

प्रिय ज्योति, मैं आपका दर्द और पीड़ा समझ सकता हूँ। एक तरफ आपके पास एक पिता है जो आपको नियमित रूप से प्रताड़ित करता है और दूसरी तरफ आपको प्यार मिलता है। एक अप्रत्याशित व्यक्ति। अब आपने इस तथ्य को स्वीकार करते हुए शादी करने का फैसला किया है कि एक अनजान रिश्ते से आपको जो खुशी मिलती है वह बहुत है। एक ज्ञात रिश्ते से आप जिस पीड़ा से गुजरते हैं, उससे बेहतर है। इसके अलावा, चूंकि आप



12वीं कक्षा में हैं, मुझे आश्चर्य है, अपना जीवन साथी चुनने में, अपनी पढ़ाई को बंद करने और इस उम्र में शादी करने से आपके पक्ष में काम करेगा। इस उम्र में ऐसकोई भी निर्णय आपको प्रभावित कर सकता है और आपको बहुत बड़ा नुकसान पहुंचा सकता है।

आप एक अच्छी मुखिया-मालकिन बनने का सपना देखते हैं। लेकिन, अपने रास्ते में आने वाली दर्दनाक बाधाओं पर काबू पाने और एक प्रमुख मालकिन

बनने के अपने सपने का पीछा करने के बजाय, आप एक असुरक्षित विवाहित जीवन में कदम रखना चाहती थी।

इस मामले में अगर यह दर्दनाक पथ आपके जीवन में आता है, आपने 12वीं कक्षा पूरी कर ली होगी और बाद में अपने कॉलेज की पढ़ाई जारी रख सकते हैं। आप बी.एड में भी दाखिला ले सकते हैं और संभावना है कि आप अपने भविष्य में, जैसा आपने सपना देखा था, एक प्रमुख मालकिन बन सकती हैं।



जब आप इन सब बाधाओं और दर्द को पार कर लेते हैं, आप बहुत खुश होंगे और आप जैसी कई महिलाओं के लिए एक आदर्श बन सकती हैं। संभावना है कि आपके पिता अपना मन बदल सकते हैं और शराब पीने की आदत छोड़ सकते हैं। वह व्यक्ति सहारा बन सकता है। जब आप अपने पिता से प्यार प्राप्त करते हैं और समझते हैं कि अनजान व्यक्ति से आपको जो प्यार मिलता है वह सबसे अच्छा नहीं है, तो इस बात की अधिक संभावना है कि आप अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

हो सकता है कि अगर आप शादी का चुनाव करके और अपनी पढ़ाई की उपेक्षा करके गलत निर्णय लेते हैं।

आपके पास अपनी माँ के लिए एक अतिरिक्त बोझ और शर्म लाने की अधिक संभावना है जो पहले से ही कई

मुसीबतों का सामना कर चुकी हैं। आपके इस कृत्य के कारण, आपके परिवार को एक भयानक स्थिति का सामना करना पड़ सकता है और आप अपनी माँ को खो भी सकते हैं। जिस पर आपने बहुत भरोसा किया वह हार भी सकती हैं। अगर वह आपको छोड़ दे तो आप क्या करेंगे?

आप अपनी पढ़ाई, अपने माता-पिता और एक प्रमुख मालकिन बनकर समाप्त हो जाएंगे। बस सोचो और कार्य करो।

इन दिनों हमें कुछ भी सहजता से नहीं मिल सकता है।

एक लक्ष्य प्राप्त करने और जीवन में सफल होने के लिए



हमें सभी दर्द और बाधाओं को दूर करने की आवश्यकता है।

यदि हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कोई शॉर्टकट चुनते हैं तो हम बड़े खतरे में पड़ जाएंगे ज्योति, जीवन में आपकी वर्तमान स्थिति एक दिन बदल जाएगी।



ऐसी ही एक दुखद बैठक यूसुफ नाम के एक युवक के जीवन में भी उठी थी। परमेश्वर ने उसे राष्ट्र का राजा बनने के लिए उठाया क्योंकि वह महान।

और पवित्र था। आपके जीवन में भी, जब आप धैर्यवान और पवित्र होते हैं,

तो यीशु आपकी स्थिति को बदल देगा और आपके लक्ष्य को प्राप्त करने में आपकी सहायता करेगा। आपका लक्ष्य पूरा हो जाएगा!

लक्ष्य

यीशु मसीह

हीन भावना

धन संकट

डर

परिवार की परिस्थिति



हो सकता है कि आपने स्कूल या कॉलेज समाप्त कर लिया हो और जीवन में अपने अगले कदम की प्रतीक्षा कर रहे हों, या यदि आप उन लक्ष्यों तक पहुँच सकते हैं, जिनकी आप हमेशा से आकांक्षा रखते थे, तो आप हैरान हो सकते हैं। "मैं मसीह के द्वारा सब कुछ कर सकता हूँ जो मुझे सामर्थ देता है।" (फिलिप्पियों 4:13) इस विचार को अपने मन में रखें और अपने लक्ष्य की ओर दौड़ें। बाकी की देखभाल परमेश्वर करेंगे।

आज के युवा एक बड़े लक्ष्य के साथ यात्रा की शुरुआत करते हैं लेकिन बहुत कम लोग इसे हासिल कर पाते हैं। इसका कारण यह है कि उनमें से अधिकांश की ऊर्जा और आत्मविश्वास शुरुआत में बाधाओं का सामना करने पर समाप्त हो जाता है। आमतौर पर, अपने लक्ष्यों की खोज के दौरान, हमें पारिवारिक स्थितियों, वित्तीय संकटों, लोगों से अपमानजनक शब्दों, भय और हीन भावना के रूप में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। लेकिन हमारा ध्यान हमेशा मंजिल पर होना चाहिए न कि बाधाओं पर। अगर हम अपने सामने आने वाली रुकावटों से निराश हैं तो हम अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाएंगे। दौड़ में भाग लेने वाले अपने रास्ते में आने वाली बाधाओं को सफलतापूर्वक पार करने के बाद ही विजेता बनते हैं। एथलेटिक्स हो या जीवन, एक व्यक्ति जिसने यह सब पार किया और एक विजेता के रूप में उभरा, वह है धनलक्ष्मी। बहुत कम उम्र में अपने पिता को खोने के बाद, उसकी माँ की दैनिक मजदूरी उनके परिवार के लिए आय का एकमात्र स्रोत।

अपनी विनम्र पृष्ठभूमि के बावजूद, उसने 13 साल की उम्र से एक एथलीट बनने की ठान ली और इस दिशा में काम करना शुरू कर दिया। उसने अपनी गरीबी या पारिवारिक स्थिति को अपने विकास में बाधा नहीं बनने दिया। वह अंततः अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प के कारण भारत की सबसे प्रसिद्ध एथलीट बन गई। उसने अंतर-राज्यीय एथलेटिक कॉम याचिका में भाग लिया और 100 मीटर दौड़ में भाग लिया,



हीमादास और दुती चंद जैसे साथी एथलीटों से भयभीत हुए बिना, और इसे जीत लिया। उन्होंने 200 मीटर में पीटी उषा (23.305) के 23 साल के रिकॉर्ड (23.26) को भी तोड़ा और पूरे देश का ध्यान खींचा। वह यह दिखाने के लिए सबसे अच्छा उदाहरण है कि कड़ी मेहनत और दृढ़ निश्चय के साथ सब कुछ संभव है। अपने जीवन में भी, जब आप किसी लक्ष्य की ओर बढ़ रहे होते हैं, तो आपको यरीहो जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। आप उनसे निराश न हों। आपके रास्ते में कितनी भी बाधाएँ क्यों न आएँ आप अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं केवल सफलता पाने के लिए बिना विचलित हुए आगे बढ़ते हुए, आपको धैर्य और विश्वास की आवश्यकता है। क्योंकि “विश्वास करनेवाले के लिए सब कुछ हो सकता है।” (मरकुस 9:23) जोसफ ने 17 साल की उम्र में अपने जीवन के बारे में बड़े सपने देखे थे। उसे जीवन में विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा और उनके अपने परिवार ने उनका विरोध किया कोई भी उन्हें समझ नहीं पाया। मिस्र को बेचे जाने के बाद पोतिपर के घर में उसे शर्मसार किया गया और बाद में उन्हें जेल में डाल दिया



गया, भले ही वह ऐसी निराशाजनक स्थिति से गुज़रे। उन्होंने अपने विश्वास से कोई समझौता नहीं किया, उनका दृढ़ विश्वास था कि एक दिन परमेश्वर उनके सपनों को पूरा करेगा। वह 13 वर्षों तक धैर्यवान रहा और महिमा प्राप्त करने से पहले उसने बहुत कठिनाइयों का सामना किया। उनके धैर्य और विश्वास ने ही उन्हें अपने लक्ष्य तक पहुँचाया। मेरे प्यारे नौजवानों! आप अपने लक्ष्य के जितना करीब होंगे, आपको उतनी ही बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। यदि आप इन अवरोधों को अपनी प्रगति को प्रभावित करने देते हैं, तो नुकसान आपका है।

सभी बाधाओं को पार करने और सफलता तक पहुँचने के लिए, परमेश्वर के वचन को देखें जो कहता है “हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ; परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।” (फिलिप्पियों 3:13,14)

GOAL

अपने लक्ष्य कैसे निर्धारित करें?

सबसे पहले अपने लक्ष्यों पर निर्णय लें और आप अपने जीवन से क्या हासिल करना चाहते हैं। खोजें कि क्या आपको प्रेरित कर सकता है, और इसे अपना लक्ष्य निर्धारित करने दें। लक्ष्य स्पष्ट और सटीक होने चाहिए। वे प्राप्य, मापने योग्य, उपयुक्त और निश्चित होने चाहिए।

यह बेहतर है यदि आप हासिल करने के लिए मील के पत्थर निर्धारित करते हैं और काम करने के लिए चीजों की जांच करते हैं। इसलिए जब आप अपनी टू-डू सूची में अपने आइटम की जांच करते हैं या एक मील के पत्थर पर पहुँच जाते हैं, तो आपको पता चल जाएगा कि आप प्रगति कर रहे हैं। यह आपको आगे बढ़ने और अधिक करने के लिए प्रेरित करेगा। सफल व्यक्तियों का अपना लक्ष्य स्वयं के लिए निर्धारित होता है।

तो, सफल बनने के लिए अपने जीवन में, आपको अपने ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और जीवन में सही प्राथमिकताएँ तय करनी चाहिए। तभी आप अपने लक्ष्य को पूरा कर पाएंगे।



विश्वास कहाँ है ?



एक दिन यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "आओ हम झील के उस पार चलें।
"सो, वे नाव पर चढ़े और चल पड़े। जैसे ही वे खाना हुए। वह सो गया।
झील पर एक तूफान आया, जिससे नाव डूब रही थी, और वे बहुत खतरे में थे।
शिष्यों ने जाकर उसे जगाया और कहा, "गुरु, गुरु, हम डूबने वाले हैं!"
" उसने उठकर आँधी और प्रचण्ड जल को डांटा; और तूफान थम गया,
और सब शांत था। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा "आपका विश्वास कहाँ है?"।
वे डर और विस्मित होकर एक दूसरे से पूछने लगे, "यह कौन है? वह आन्धी
और जल को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी मानते हैं।" (लूका 8:22-26)

यीशु और उनके चेले यात्रा करने लगे जब उसने कहा कि चलो झील के दूसरी ओर चलते हैं। गंतव्य तक पहुंचने में कुछ घंटे लग गए। इसलिए जैसे ही नाव चलना शुरू होती है, यीशु को थकान महसूस होती है और नींद आने लगती है, हम उसे थके हुए और इस स्थान पर सोते हुए देख सकते हैं यीशु सो रहे थे, झील में एक तूफान आया और नाव में पानी भर गया। शिष्यों ने बहुत कोशिश की लेकिन वे नाव में पानी को रोक नहीं सके। इसलिए उन्होंने यीशु को जगाया। सो उस ने उठकर आन्धी और प्रचण्ड जल को डांटा। हर कोई चकित था कि कैसे हवा और समुद्र ने उसकी बात मानी। अब यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा, "तुम्हारा विश्वास कहाँ है? तुम क्यों डरे हुए थे? क्यों चिल्लाया कि तुम डूब रहे थे? तुम क्यों चिंतित थे?" शिष्यों ने उत्तर दिया, "चूंकि तूफान बढ़ा था। समुद्र उबड़-खाबड़ हो गया और नाव में बाढ़ आ गई, हमें डर है कि हम डूब जाएंगे" आपके जीवन में भी आपका कर्ज, बीमारी, शादी में समस्याएं गरीबी एक बड़े तूफान की तरह आपको मार सकती है



करें, तूफानों का सामना करें, यदि आपके पास एक मजबूत विश्वास है, तो आप उस दूसरी तरफ पहुंच सकते हैं जिसे आप बीच में नहीं खींचेंगे। यीशु उसके लिए विश्वास की उम्मीद करते हैं। अपनी सेवकाई के शुरूआती दिनों में, मैं एक गाँव में गया जो मेरे पड़ोसी शहर नासरत के पास स्थित था। वहाँ की कलीसिया के साधारण प्रचारक ने मुझसे पूछा कि क्या हम वहाँ जाकर ऐसे परिवार के लिए प्रार्थना कर सकते हैं जो अपने जीवन में कठिन समय का सामना कर रहे थे। जब हम दोनों वहाँ गए तो देखा कि एक माँ और बहू की गोद में एक बच्चा है। उनके चेहरे पर भी उदासी। दीदी भी उदास थी। उस समय, पवित्र आत्मा ने मुझे उनसे बात करने के लिए निर्देशित किया। मैंने उनसे कहा कि परिवार में एक बड़ा संकट है जो उनके दिलों पर बोझ है और उन्हें मेरे साथ साझा करने के लिए कहा ताकि मैं उनके लिए प्रार्थना कर सकूँ। बहन झुक कर रो रही थी। माँ बोलने लगी।

क्या आप चिंतित हैं कि आपके जीवन नौका पुरुषों और शैतान द्वारा दी गई समस्याओं और संघर्षों में डूब जाएगी? यीशु आपसे पूछ रहे हैं "आपका विश्वास कहाँ है" चाहे आप कितने भी संघर्ष

"सर! वह मेरी बहू है। मेरा बेटा कम मजदूरी पर काम करता है। उनके पहले से ही दो बच्चे हैं और यह तीसरा है। गरीबी के कारण हम अपने पहले दो बच्चों को भी ठीक से खाना नहीं दे पा रहे हैं। मेरा बेटा घर मजदूरी लाता है, हम मामूली मजदूरी के साथ जीवन

व्यतीत कर रहे हैं। इस मुश्किल समय में हम सोच रहे हैं कि हम तीसरे बच्चे की परवरिश बच्चे को किसी और को दे सकते हैं।

“आपके पास एक बाइबिल है। आप यीशु मसीह में विश्वास करते हैं। फिर आपका विश्वास कहाँ है?”, मैंने उनसे पूछा। हवा के पंछियों को देखो; वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खलिहानों में रखते हैं, तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। देखिए खेत के फूल कैसे उगते हैं। यदि परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज और कल आग में झोंकी जाती है, पहिनाता है, तो क्या वह तुम्हें न पहिनाएगा। इसलिए कल की चिंता मत करो। देखिए कैसे यीशु ने ऐसी अद्भुत बातें कही थीं और उन्हें हमारी दैनिक जरूरतों के लिए लिखा था। क्या आपको उस पर विश्वास नहीं है? उसकी बातों पर विश्वास नहीं? क्या तुम विश्वास नहीं करते कि जिस यहोवा ने यह बालक दिया है वह तुम्हें आशीष देगा। वह यहोवा है जिसने 30 लाख लोगों को खिलाया और बिना किसी कमी के 40 वर्षों तक जंगल में उनका नेतृत्व किया। क्या परमेश्वर ने कहा कि वह तीसरे बच्चे को नहीं

खिला सकते? क्या उसने कहा था कि वह केवल पहले दो बच्चों को ही तैयार कर पाएगा, तीसरे को नहीं? क्या उसने कहा था कि उसके पास तीसरे बच्चे को पालने के लिए पैसे नहीं हैं? हमें उस पर क्या विश्वास है? क्या आपका कोई चिंतित पिता नहीं है जो आपको खिलाता है, आपको कपड़े पहनाता है, आपकी ज़रूरतों को पूरा करता है, आपकी चिंता करता है और यहाँ तक कि आपके

सिर में बालों की संख्या भी जानता है? कहां गई आपकी आस्था? क्या मैं तुम्हें नौकरी नहीं दूंगा? क्या मैं व्यापार में आपकी मदद नहीं करूंगा? क्या मैं तुम्हारे बच्चों को शिक्षा नहीं दूंगा? क्या मैं तुम्हारे बच्चों को नहीं खिलाऊंगा? क्या मैं सेवकाई करने के लिए तुम्हारी ज़रूरतों को पूरा नहीं करूंगा? मैं कुछ भी कर सकता हूँ। यह आपकी बेवफाई के कारण है कि आपको ये प्राप्त नहीं हुए हैं। प्रभु कहते हैं कि तुम संदेह में हो, डर और डूबने की स्थिति में क्योंकि आप मुझे ढूँढे बिना स्थिति को देखते हैं। प्रभु से कहो कि तुम उस पर भरोसा करते हो। उसका मार्गदर्शन बिल्कुल अलग



होगा। जब मैंने 1974 में प्रभु की सेवकाई के सामने आत्मसमर्पण किया, तो मैंने उनसे कहा कि मैं केवल बाइबिल के साथ आऊंगा, मैं अपने माता-पिता या किसी अन्य लोगों से एक पैसा भी नहीं मांगूंगा और मैं अपने भोजन के लिए दूसरों की तलाश नहीं करूंगा। पोशाक और मेरी ज़रूरतें। मैंने उनसे कहा कि मैं उनकी जिम्मेदारी हूँ। प्रभु ने मेरी ओर देखा और कहा, “कल की चिंता मत करो। मैं तुम्हारी दैनिक ज़रूरतों को पूरा करूंगा, तुम्हें खिलाऊंगा और तुम्हें मैं कपड़े पहनाऊंगा। तुम्हें इसके लिए पुरुषों की तलाश करने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हारा मार्गदर्शन करूंगा।” मैंने कहा कि मैं आप पर विश्वास करता हूँ प्रभु और उनकी सेवकाई के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। मेरे पिता और माता धनी थे। लेकिन जब मैंने सेवकाई में कदम रखा तो मुझे अपने माता-पिता से न तो एक पैसा मिला और न ही मैंने एक पैसा मांगा। मैंने यह सेवकाई मनुष्यों और उनकी भेंटों पर भरोसा करके नहीं की।

मैं परमेश्वर के वचन पर भरोसा करके आया हूँ जो मेरा पिता है। मेरा स्वामी और मेरी हर चीज है। आज तक उसने मुझे निराश नहीं किया। उन्होंने मुझे दूसरों का पक्ष लेने की अनुमति नहीं दी। साल 1974 से वह मेरे लिए काफी है। क्योंकि वह हमेशा मेरे साथ है। जब आपके जीवन की नाव में यीशु है तो आपको चिंता क्यों करनी

चाहिए? यदि आपको उस पर विश्वास है तो क्या आप खुश नहीं होंगे? “मैं तुम्हारे साथ तुम्हारी नाव में हूँ। अगर तुम लोग पानी में डूबो तो क्या मैं तुम्हें डूबने दूँगा? मुझ पर तुम्हारा विश्वास कहाँ है?” वह आपसे पूछ रहा है। उसे यह कहते हुए समर्पण करें कि आप उस पर संदेह नहीं करेंगे और उस पर विश्वास करेंगे।

मेरे प्यारे युवा ! क्या आप तूफान की तरह संघर्षों से प्रभावित हैं? विश्वास के साथ सभी संघर्षों को यीशु के हाथों में छोड़ दो। वह आपको निराश नहीं करेगा। वह आपके विश्वास की परीक्षा लेगा और अपने चमत्कार करेगा। विश्वास में रहो!



स्टीफेंसन की दृढ़ता

अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दिन-रात काम करने वाले युवा प्राप्तकर्ताओं को हमारी शुभकामनाएं। अवसर कभी भी, कहीं भी आपके दरवाजे पर दस्तक दे सकते हैं। यह छोटा या बड़ा हो सकता है। जो कोई भी उपलब्ध अवसरों को बहुत छोटा बताकर और बड़े अवसर की प्रतीक्षा में एक तरफ रख देता है, वह उपलब्ध अवसर से चूक सकता है और प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अवसर कितना बड़ा है, केवल यह मायने रखता है कि हम इसे अंजाम देने की क्षमता रखते हैं।



जाता है। उसकी हड्डियों में कोई ताकत नहीं थी और बहुत कमजोर थे। पैदा होते ही उसके दोनों पैर टूट गए।

उसकी जांच करने वाले डॉक्टरों ने स्टीफेंसन के माता-पिता से कहा कि वह 48 घंटे में मर जाएगा। लेकिन सौभाग्य से स्टीफेंसन की मृत्यु

नहीं हुई। दिन बीतते गए और उन्हें अपने घर के पास एक स्कूल में भर्ती कराया गया। स्कूल में उसका कोई भी सहपाठी उससे दोस्ती करने को तैयार नहीं था। जब वह नौवीं कक्षा में था, तब उसके पैर दरवाजे के बीच फंस गए और घायल हो गए। इस चोट के कारण वह कुछ दिनों से स्कूल नहीं जा पा

रहा था। जब स्टीफेंसन ठीक होने के बाद वापस स्कूल लौटा, तो उसके कक्षा शिक्षक ने उसे अपनी बीमारी के बारे में और अपने साथी सहपाठियों के साथ अपनी चोट से कैसे उबरने के बारे में साझा करने के लिए कहा।

स्टीफेंसन ने इस अवसर को सहर्ष स्वीकार किया और अपने सहपाठियों के साथ इसे साझा करने में प्रसन्नता हुई। उनके भाषण में अच्छी स्पष्टता थी और उनके भाषण को सुनने वाले सभी छात्रों ने उत्साहपूर्वक उनकी सराहना की। 17 साल की उम्र में स्टीफेंसन को बड़े मंच पर मोटिवेशनल स्पीच देने का मौका मिला। उनका भाषण सुनने वाले सभी लोग प्रेरित हुए और उन्होंने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया।

इसलिए जो भी अवसर मिले उसका लाभ उठाएं और तभी आप उसे हासिल कर सकते हैं। अब, आइए एक ऐसे उपलब्धिकर्ता के आकर्षक जीवन के बारे में देखें जिसने अपने जीवन में अवसरों का अच्छी तरह से उपयोग किया और हासिल किया। सीन स्टीफेंसन का जन्म 5 मई 1979 को शिकागो में हुआ था। वह एक सामान्य बच्चे की तरह पैदा नहीं हुआ था। जब उनका जन्म हुआ तो उनके परिवार ने खुशी से उनका अभिवादन नहीं किया। स्टीफेंसन का जन्म ऑस्टियोजेनेसिस इम्परफेक्टा नामक बीमारी के साथ हुआ था, जिसे “भंगुर अस्थि रोग” के रूप में भी जाना



उनकी तालियों ने उसे और भी प्रोत्साहित किया। इसके बाद वह मोटिवेशनल स्पीच को अपना करियर बनाने के बारे में सोचने लगे। उसने न केवल सोचना शुरू किया, बल्कि उस पर अमल भी किया। उन्होंने “मेक ए-विश”



नामक फाउंडेशन के साथ कई जगहों की यात्रा शुरू की और कई प्रेरक भाषण दिए। दूसरी ओर, जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, उसके शरीर में कई फ्रैक्चर हुए। जब वह 18 वर्ष के थे, तब तक उन्हें 200 से अधिक फ्रैक्चर हो चुके थे। इस स्थिति के कारण, वह नाजुक भोजन को भी काट और चबा नहीं सकता था। कार में यात्रा करते समय, वह हमेशा उसके लिए आवंटित एक अलग सीट पर यात्रा करेगा। स्टीफेंसन की हालत देखकर उसकी माँ ने उससे सवाल किया कि वह अपनी बीमारी के बावजूद यात्रा करने और प्रेरक भाषण देकर इतना संघर्ष क्यों कर रहा है। उसने अपनी माँ को उत्तर दिया कि यह एक उपलब्धि है कि वह अब 22 वर्षों से जीवित है जब डॉक्टरों ने घोषण की कि वह पैदा होने के 48 घंटे तक जीवित नहीं रहेगा और अपनी माँ से कहा कि वह एक उपलब्धि हासिल करना जारी रखेगा।

1998 में, स्टीफेंसन सबसे महान प्रेरकवक्ताओं में से एक, टोनी रॉबिन्सन से मिले। रॉबिन्सन ने उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कहा कि उनके भाषण अच्छे हैं, और उन्हें प्रेरक “को बेहतर ढंग से समझने के लिए सुझाव दिए। इस

प्रकार स्टीफेंसन ने खुद को बेहतर बनाने के लिए राजनीति विज्ञान में डिग्री हासिल करने का फैसला किया। पढ़ाई के दौरान ही उन्हें राष्ट्रपति बिलक्लिंटन के लिए एक प्रशिक्षु के रूप में काम करने का अवसर मिला। स्टीफेंसन ने 2001 में एक किताब लिखी और उसे प्रकाशित किया। पुस्तक का नाम है “हाउ यूथ कैन सक्सेस!” युवाओं के बीच इस किताब का बहुत अच्छा स्वागत हुआ। फिर से अध्ययन करने की इच्छा रखते हुए, स्टीफेंसन ने बेनेट विश्वविद्यालय चूँकि उन्हें नई चीजें सीखने में बहुत दिलचस्पी थी, उन्होंने न्यूरो भाषाई का अध्ययन किया। स्टीफेंसन को पेसिफिक विश्वविद्यालय

में एक चिकित्सक के रूप में काम करने का अवसर मिला, जहाँ उन्होंने एक पाठ्यक्रम का अध्ययन किया, और वहाँ उच्च वेतन के साथ काम करना शुरू किया। उन्हें कई स्कूलों और कॉलेजों में प्रेरक भाषण देने के लिए

आमंत्रित किया गया था। उन्हें 15,000 से 30,000 डॉलर प्रतिघंटे के बीच भुगतान किया जाता था। उनके प्रेरक भाषणों ने बहुतों को प्रोत्साहित और प्रेरित किया। स्टीफेंसन का लंबे समय से एक अनाथालय शुरू करने का सपना था। कई विकलांग व्यक्तियों को माता-पिता की देखभाल के बिना देखकर, उन्होंने उन्हें एक बेहतर जीवन देने के लिए एक अनाथालय शुरू किया जब स्टीफेंसन से पूछा गया कि वह

बना, तो उन्होंने यहां तीन बातें बताईं:

1. अपनी भावनाओं को दबोच कर रखें
2. अपने जीवन के लिए एक विशन बनाएं
3. अपने जीवन का आनंद लें

अगर आप इन तीन बातों का पालन करते हैं तो आपको भी सफलता मिल सकती है। उन्होंने कहा है, “मेरी तस्वीर को देखो जब तुम्हारे जीवन में कोई समस्या आती है। अगर मैं इतनी बड़ी कठिनाइयों को पूरा कर सकता हूँ, तो आप क्यों नहीं?”

जी हाँ दोस्तों हम सभी के जीवन में कोई न कोई मकसद जरूर होता है। हमें लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए संघर्ष जारी रखना चाहिए। हमें अपने लिए उपलब्ध अवसरों का सही समय पर उपयोग करना चाहिए। अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। हम भी अचीवर्स हैं!



जागृति न्यायपालिका

भारत की शांति, सुख और समृद्धि के लिए न्यायपालिका में पुनर्जीवन होना चाहिए। क्योंकि सरकार से सवाल करने का अधिकार सिर्फ न्यायपालिका को है। इसलिए, जब न्यायपालिका में जागृति होगा, तो वकील और न्यायाधीश ईमानदारी से काम करेंगे। इससे अपराध मुक्त देश बनेगा। उन दिनों में जब इस्राएली दुष्ट थे और धर्म के काम करने में असफल रहे, तब परमेश्वर ने न्याय के लिये गिदोन और दबोरा जैसे न्यायियों को भेजा। उसी तरह, निष्पक्ष न्यायाधीशों को उठना चाहिए और देश में व्याप्त अन्याय, अधर्म और बुराई को बदलना चाहिए। भारतीय न्यायपालिका में 4.70 करोड़ से अधिक मामले लंबित हैं। इसके अलावा, 30 से अधिक वर्षों से 1,82,000 मामले लंबित हैं। इससे अपराधियों की संख्या बढ़ती जा रही है और अपराध पर लगाम नहीं लग पा रही है। अधिकांश अपराधी साहसपूर्वक अपराध करते हैं क्योंकि दोषी होने में बहुत लंबा समय लगता है। वर्तमान स्थिति को बदलने के लिए, हमें गिदोन और दबोरा जैसे धर्मी न्यायाधीशों के उत्थान के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। यदि आप न्यायपालिका में जागृति के लिए प्रार्थना करते रहेंगे, तो निश्चित रूप से एक जागृति होगा। “.. और क्या परमेश्वर अपने चुने हुएों का न्याय न करेगा, जो दिन रात उसकी दोहाई देते हैं? क्या वह उन्हें टालेगा?” (लूका 18:7)। वह निश्चित रूप से आपकी प्रार्थना का उत्तर देगा। इसलिए, न्यायपालिका के जागृति के लिए प्रार्थना करते रहें।



न्यायपालिका का विवरण

1. सुप्रीम कोर्ट-1
2. उच्च न्यायालय-25
3. जिला न्यायालय - 672
4. सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश - 32
5. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश - 1079
6. अधिवक्ता- लगभग 20 लाख



प्रिय युवा! जब परमेश्वर की शक्ति न्यायालयों पर शासन करती है, तो परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट होगी। “यहोवा सब उत्पीड़ितों के लिये धर्म और न्याय का काम करता है।” (भजन 103:6)। जब आप पुनरुत्थान के लिए प्रार्थना कर रहे हों, तो न्यायपालिका में जागृति के लिए प्रार्थना करना न भूलें। यहोवा जो धर्म से प्रीति रखता है और अधर्म से बैर रखता है, वह निश्चय तेरी प्रार्थना सुनेगा और हमारे देश को शुद्ध करेगा।



बाइबिल में पक्षी बटेर

- ◀ बटेर सबसे छोटा पक्षी है और लगभग होगा साढ़े सात इंच
- ◀ यह बहुत तेज उड़ सकता है और तेज दौड़ सकता है
- ◀ यह बहुत दूर तक नहीं उड़ सकता लेकिन केवल एक निश्चित सीमा तक
- ◀ यह पानी में नहीं नहाता। अन्य पक्षियों की तरह लेकिन मिट्टी में नहाता है।
- ◀ यह जमीन पर ही समय बिताता है।
- ◀ वे अपने माता-पिता का अनुसरण करना शुरू करते हैं सप्ताह या दो।
- ◀ यह केवल 3 - 5 साल रहता है



आइए देखें कि बाइबिल क्या कहती है बटेर के बारे में

बाइबल में, बटेर का पहला उल्लेख निर्गमन 16:12, 13 में मिलता है। इस्राएल के लोगों ने किब्रोथ के क्षेत्र में डेरा डाला। जब उन्होंने मांस खाने की इच्छा की तो उन्होंने मूसा से अपील की। इस्राएल के लोगों ने बड़बड़ाया कि मन्ना के अलावा कुछ भी खाने को नहीं है, और यहोवा ने मूसा से कहा, “क्या यहोवा का हाथ छोटा नहीं हुआ है? अब तुम देखोगे कि मेरा वचन तुम्हारे पास पूरा होता है या नहीं”। और यहोवा की ओर से एक आँधी चली, और वह ले आई

3 फीट ऊंचाई (संख्या 11: 31,32)। बटेर समूहों में थे लगभग 3 फीट ऊंचाई। इस्राएल के लोगों ने इन बटेरों को खाया और इसके साथ संघर्ष कर रहे थे। क्या इस्राएल का परमेश्वर नहीं होगा जो हज़ार साल पहले इस्राएलियों की ज़रूरतें पूरी करें आज आपकी ज़रूरत है?।

प्रिय किशोरों, हमारा परमेश्वर जो निर्जन जंगल में इस्राएलियों की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करता था, हमारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा और बिना किसी असफलता के सब कुछ पूरा करेगा। वह हमारा वफादार परमेश्वर है। आज आप अपने जीवन में चाहे जो भी सूखा मंल देखें, दृढ़ विश्वास रखें कि हमारा ईश्वर आपको समृद्ध बनाने के लिए पर्याप्त है। वह निश्चित रूप से आपके जीवन की ज़रूरतों के अनुरूप आपको बटेर खिलाएगा और आपके साथ इतना अद्भुत व्यवहार करेगा।



मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा। (फिलिप्पियों 4:19)

प्रार्थना गाइड

जून 2022



भारतीय पुलिस

वर्तमान में भारत में 20,91,488 पुलिस अधिकारी कार्यरत हैं। कुल गिनती

में 2,15,504 पुलिस महिलाएं हैं। भारत में सबसे अधिक पुलिस महिलाओं वाले 5 राज्यों में से, उत्तर प्रदेश 29,112 के साथ सूची में सबसे ऊपर है। महाराष्ट्र 26,890 पुलिस कर्मियों के साथ दूसरे, बिहार 23,245 पुलिस कर्मियों के साथ तीसरे, तमिलनाडु 20,861 पुलिस कर्मियों के साथ चौथे और दिल्ली 10,110 पुलिस कर्मियों के साथ पांचवें स्थान पर है।

1. आइए हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर अच्छी बुद्धि और सुरक्षा दें वर्तमान में भारत में 20,91,488 पुलिस अधिकारी कार्यरत हैं।

2. आइए हम भारत में काम कर रही इन 2,15,504 पुलिस महिलाओं की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें और यह भी प्रार्थना करें कि परमेश्वर इन पुलिस महिलाओं के माध्यम से महान कार्य करें।

3. आइए हम दिल से प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन हजारों पुलिस अधिकारियों को अच्छा स्वास्थ्य, शक्ति और कल्याण प्रदान करें जो अवसाद और काम के दबाव से पीड़ित हैं।

4. परमेश्वर से प्रार्थना है कि जो पुलिस विभाग में हैं उन्हें पर्याप्त आराम दिया जाए और काम का बोझ भी कम किया जाए।

5. आइए हम प्रार्थना करें कि अत्यधिक काम के बोझ के कारण परिवारों में झगड़े और अलगाव न हो।

6. आइए हम उन आत्माओं के खिलाफ प्रार्थना करें जो पुलिस विभाग में रहने वालों के दिलों में आत्मघाती विचार लाती हैं।

7. आइए प्रार्थना करें कि विभिन्न घटनाओं में मरने वाली पुलिस रोका गया और उन्हें शांतिपूर्वक काम करना चाहिए। साथ ही प्रार्थना करें कि सभी कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए कुछ न कुछ प्रयास करें..

8. प्रार्थना करें कि सरकार रिक्तियों को भर दे और पुलिस पर काम का बोझ कम करे जो वर्तमान में कार्यरत हैं।

9. आइए हम पुलिस विभाग में भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए प्रार्थना करें और सरकार को ईमानदार अधिकारियों की भर्ती करनी चाहिए और उन्हें पद पर रखना चाहिए।

10. आइए प्रार्थना करें कि पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारी अपने कनिष्ठों के प्रति विनम्र रहें और साथ ही उन्हें उनकी भलाई को समझना चाहिए और उनके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए।



विद्युत उत्पादन

भारत में वर्तमान में 7 परमाणु ऊर्जा संयंत्र चल रहे हैं। महाराष्ट्र राज्य में, तारापुर परमाणु ऊर्जा स्टेशन में 4 परमाणु रिएक्टर प्रचालन में हैं; 160 मेगावाट की क्षमता वाले 2 उबलते पानी रिएक्टर (बीडब्ल्यूआर) और 540 मेगावाट की क्षमता वाले 2 दबाव वाले भारी पानी रिएक्टर (पीएचडब्ल्यूआर)।

कोयले की कमी से पूरे देश में बिजली गुल होने का खतरा है। देश के कुल बिजली उत्पादन का लगभग 70% ताप विद्युत संयंत्रों से आता है। भारत में ताप विद्युत संयंत्र बिजली के प्रमुख स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।

1. आइए हम प्रार्थना करें कि परमाणु ऊर्जा संयंत्र संचालित हों भारत में ठीक से काम करना चाहिए और वह भी अधिक शक्ति उत्पन्न करनी चाहिए।
2. हम प्रार्थना करें कि अब कोयले की कमी न हो और बिजली कटौती को रोका जाए।
3. आइए हम भारत भर के सभी 135 ताप विद्युत संयंत्रों में कोयले की निर्बाध आपूर्ति के लिए प्रार्थना करें।
4. आइए हम प्रार्थना करें कि कृषि और उद्योगों को बिजली कटौती से प्रभावित न किया
5. आइए हम सभी राज्यों में बिजली की निर्बाध आपूर्ति के लिए प्रार्थना करें।
6. हम प्रार्थना करें कि सरकार आवश्यक मात्रा में कोयले का आयात करने और भारत में बिजली संकट को कम करने के लिए तत्काल कार्रवाई करे।
7. आइए हम प्रार्थना करें कि छोटे व्यवसाय न हों कोयले की कमी के कारण बिजली कटौती से प्रभावित है।
8. आइए हम प्रार्थना करें कि कम कोयला भंडार वाले ताप विद्युत संयंत्रों तक कोयले के परिवहन के लिए पर्याप्त परिवहन सुविधाएं उपलब्ध हों।
9. आइए हम प्रार्थना करें कि हमारे लोग बिजली को बिना बर्बाद किए, जरूरत के मुताबिक इस्तेमाल करें।
10. हम प्रार्थना करें कि विद्युत बोर्ड में सभी रिक्तियों को शीघ्र ही भरा जाए और की सुरक्षा के लिए।

छात्र

भारत में, पिछले 10 वर्षों में यानी जनवरी 2009 से दिसंबर 2018 तक लगभग 81,758 छात्रों ने आत्महत्या की है। पिछले 5 वर्षों में 2018 तक 57% आत्महत्याएं हुई थीं। आंकड़ों में उल्लेख किया गया है कि 10,159 छात्रों ने आत्महत्या की क्योंकि वे अपनी परीक्षा में असफल रहे। अकेले वर्ष 2020 में प्रतिदिन औसतन 34 छात्रों ने आत्महत्या की। हमारे देश में साल 2020 में 12,500 छात्रों ने की आत्महत्या तनाव और आत्महत्या की ओर ले जाता है।

आत्मघाती

1. आइए प्रार्थना करें और उस दुष्ट आत्मा को बांधें जो इन छात्रों के कम अंक प्राप्त करने या अपनी परीक्षा में असफल होने पर आत्मघाती विचारों को भड़काती है।
2. आइए हम परमेश्वर की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें ये विद्यार्थी।
3. आइए हम प्रार्थना करें और उन आत्माओं को बांधें।
4. आइए हम इन छात्रों के भविष्य के भय से मुक्ति के लिए प्रार्थना करें आइए प्रार्थना करें जो छात्र अपनी तरक्की की प्रतीक्षा कर रहे हैं मनचाहा कोर्स करने के लिए पढ़ाई

Petra



भाग 5

पतरस के
साथ एक यात्रा



पतरस मलखुस का कान काटना

उस गुरुवार की रात, पतरस, जो गतसमनी के बगीचे में सो रहा था, ने अचानक सैकड़ों सैनिकों को बंधनों, मशालों और हथियारों के साथ, और महायाजक, फरीसियों के सेवकों को सोते हुए और भय, भय और चिंता के साथ पकड़ते हुए देखा। यीशु सहस्रपूर्वक पूछता है कि वह किसे ढूंढ रहा है। उत्तर उस बड़ी सेना के बीच से आया जिसने कहा, “नासरत का यीशु”। यीशु ने जो कहा, “मैं यीशु हूँ” की शक्ति को सहन करने में असमर्थ, वे सभी पीछे झुक गए और जमीन पर गिर पड़े। उन्हें यह जानने का भी अवसर दिया गया कि वे जिस व्यक्ति को गिरफ्तार करने आए थे, वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं था, बल्कि शब्दों में महाशक्तिशाली व्यक्ति था। ऐसी स्थिति में भी, पतरस चकित था कि यीशु बिना किसी भय या भ्रम के शांतिपूर्वक और निडरता से बोला। लेकिन शिष्यों की मनोदशा को जानकर, यीशु ने दोहराया कि वह यीशु हैं और उनसे अपने शिष्यों को जाने देने के लिए कहते हैं। जब कोई व्यक्ति समस्याओं का सामना करता है और कठिन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करता है। वह खुद को अपनी दुर्दशा से बचाना चाहता है, न कि अपने करीबी

लोगों से लेकिन यीशु, मौत से नहीं डरते, निडर होकर खड़े होते हैं और अपने शिष्यों को उनके घरों में सुरक्षित भेजने की कोशिश करते हैं ताकि उनकी परिस्थिति उन पर असर न करे। पतरस

यीशु के ईश्वरीय स्वभाव, अपने शिष्यों के लिए उसके प्रेम और उस संदर्भ में उनकी रक्षा करने के उसके गंभीर प्रयासों से प्रभावित हुआ। यीशु को गिरफ्तार होने से बचाने के लिए बेताब, उसने महायाजक के सेवक मलखुस का दाहिना कान काट दिया।



मछुआरे को आमतौर पर कान की तरह दिखने वाली मछली के पेक्टोरल पंख काटने की आदत होती है और उसी आदत में पीटर मलखुस का कान काट देता है। पतरस के सामने यीशु के लिए क्रोध, साहस और प्रेम ने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया। पतरस ने दास को मारने का प्रयास नहीं किया, यद्यपि वह अपने मन में भयभीत और चबराया हुआ था, और उसके हाथ में तलवार थी। वह संयम से गिरफ्तारी की

प्रक्रिया को रोकने की कोशिश करता है। फिर भी वह यीशु की आज्ञा का पालन करता है और तलवार को म्यान में रखता है। एक शिष्य यीशु को चूम कर धोखा देता है। मैं नहीं जानता कि अन्य शिष्य कहाँ गए। यह तथ्य कि पतरस अकेला खड़ा था और उसने यीशु का कान काट दिया, यह दर्शाता है कि पतरस विशेष था।

पतरस ने यीशु के साथ विश्वासघात किया

यह घटना नए नियम के चार सुसमाचारों में एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में लिखी गई है (मत्ती 26:58, 69-74; मरकुस 14:54, 66-72; लूका 22:54-62; यूहन्ना 18:15-18, 24-27)। पतरस यीशु को गिरफ्तार और ले जाते हुए नहीं देख सकता था। अन्य सभी शिष्य यीशु के पास से भाग गए (मत्ती 26:56)। उसका मन सोच रहा था कि यीशु का क्या होगा, इसलिए वह दूर से यीशु के पीछे हो लिया, अपने सेवकों के साथ महायाजक कैफा के महल के प्रांगण में बैठकर ठंडा हो गया। और महायाजक की दासियों में से एक ने कहा, “तू भी नासरी यीशु के साथ था।” तुरन्त पतरस सब मनुष्यों के साम्हने यह कहकर इन्कार करता है, कि मैं नहीं जानता, मैं नहीं जानता कि तू क्या कहता है। तुरंत मुर्गा बांग देता है। परन्तु पतरस के मन में भय और भ्रम के कारण पतरस ने उस पर ध्यान नहीं दिया। वह वापस दरवाजे पर आता है और बैठ जाता है। एक और नौकर; जब वह कहता है कि वह नासरत के यीशु के साथ था, तो वह उस आदमी को दूसरी बार इन्कार करता है और कसम खाता है कि वह उसे नहीं जानता। और जब पास खड़े लोगों ने कहा। “निश्चय ही तू उनमें से एक है, और तू गलीली है, और तेरी बातें ऐसी ही हैं, “वह शाप देने लगा, और शपथ खाकर कहने लगा, कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता, जिसके विषय में तू बात करता है, और तीसरी बार उसका इन्कार किया। मुर्गे ने दूसरी बार बाँग दी, और अब केवल पतरस को वह वचन याद है जो यीशु ने कहा था। और यीशु ने मुड़ कर पतरस की ओर देखा। पतरस यह दृष्टि सहन नहीं कर सका। वह

हृदयविदारक हो जाता है। वह अकेले रोने के लिए जगह की तलाश में निकलता है, और उसे अपने कार्यों के लिए खेद होता है। वह तुरंत सुलह कर लेता है।

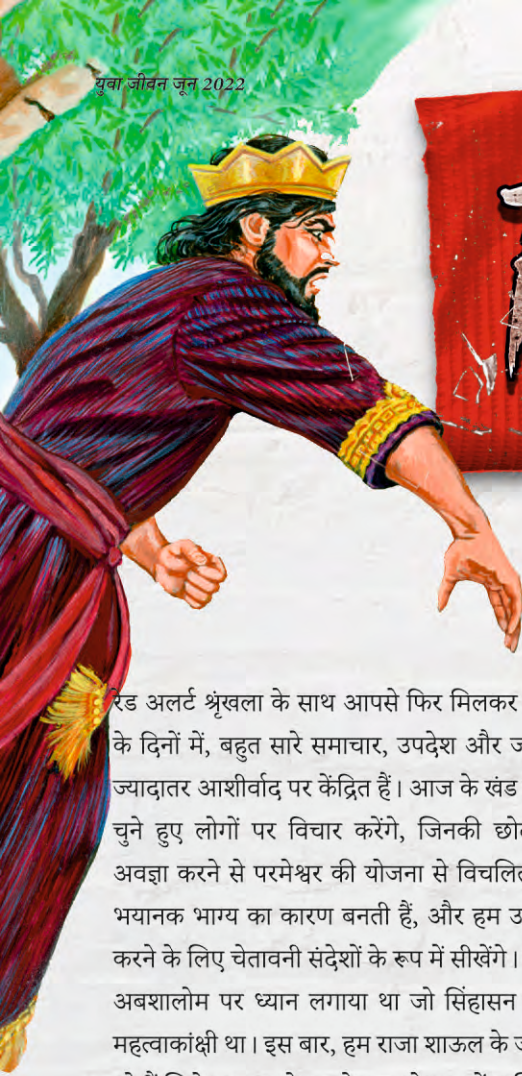
शायद अगर वे दूसरे शिष्यों की तरह भाग जाते और कहीं छिप जाते, तो ऐसी परीक्षा नहीं आती। परन्तु जिस मुख से यह कहा गया था कि यदि तुम्हारे साथ मरना भी पड़े, तो भी वह इनकार नहीं करेगा, वह तीन बार यीशु को भूल चुका था। लेकिन यहूदा के विपरीत, उसने मृत्यु की तलाश नहीं की! एक दोषी विवेक से। वह यीशु से क्षमा माँगता है, उसके साथ अपने रिश्ते को फिर से जीवित करता है, और सामान्य स्थिति में लौटता है, उसे दोषी विवेक को लेने की अनुमति नहीं देता है।



उस समय तक, न तो अन्य शिष्यों और न ही पतरस को पवित्र आत्मा के द्वारा फिर से जन्म लेने का अनुभव था। उन्होंने पवित्र आत्मा को तब तक प्राप्त नहीं किया जब तक कि उन्हें मसीह के पुनरुत्थान के बाद उन पर नहीं फूँका गया (यूहन्ना 20:22) और कहा, “पवित्र आत्मा प्राप्त करें।” यीशु कहते हैं, “कि जब पवित्र आत्मा तुम्हारे पास आएगा, तब तुम यहूदिया और सामरिया में और

पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे” (प्रेरितों के काम 1:8), उसी घर में हन्ना और कैफा, जहां पतरस ने यीशु का इन्कार किया था। उनके सामने, पतरस साहसपूर्वक पवित्र आत्मा की शक्ति से गरजता है: ‘यीशु मसीह, जो तुम्हारे द्वारा क्रूस पर चढ़ाया गया था’ (प्रेरितों के काम 4:6,10)। इसलिए, यह कहने के बजाय कि पतरस का इन्कार अधर्म का कार्य था, यह कहा जा सकता है कि उसकी कमजोरी ही इसका कारण है।

(पतरस के साथ यात्रा और अधिक रोचक जानकारी के साथ जारी रहेगी)



RED ALERT

शाऊल

रेड अलर्ट श्रृंखला के साथ आपसे फिर मिलकर अच्छा लगा। हाल के दिनों में, बहुत सारे समाचार, उपदेश और जारी किए गए गीत ज्यादातर आशीर्वाद पर केंद्रित हैं। आज के खंड में, हम परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर विचार करेंगे, जिनकी छोटी-छोटी गलतियाँ अवज्ञा करने से परमेश्वर की योजना से विचलित हो जाती हैं और भयानक भाग्य का कारण बनती हैं, और हम उनसे स्वयं को ठीक करने के लिए चेतावनी संदेशों के रूप में सीखेंगे। पिछली बार, हमने अबशालोम पर ध्यान लगाया था जो सिंहासन से मिलने के लिए महत्वाकांक्षी था। इस बार, हम राजा शाऊल के जीवन से सीखने जा रहे हैं जिसे इस्राएल के पहले राजा के रूप में अभिषिक्त किया गया था। जब परमेश्वर ने शाऊल को चुना, तो उसने किसी विनम्र, परमेश्वर का भय मानने वाले को चुना, और यहां तक कि भविष्यद्वाणी भी की। बाइबिल के अनुसार एक अच्छा इंसान होते हुए भी परमेश्वर ने उन्हें ठुकरा दिया और उन्हें राजा बनाने का पछतावा हुआ। आइए देखें कि शाऊल की आशाजनक शुरुआत का अंत भयानक रूप से क्यों हुआ?



मनुष्य को प्रसन्न करने के लिए उसने परमेश्वर को निराश किया।

1 शमूएल 13 में, जब शाऊल ने दो वर्ष तक राज्य किया, तब फिलिस्ती इस्राएल से लड़ने को इकट्ठे हुए (1 शमूएल 13:5)। वे संख्या में बहुत बड़े थे। शाऊल शमूएल की प्रतीक्षा कर रहा था कि

वह प्रार्थना करे और युद्ध का नेतृत्व करने के लिए परमेश्वर को होमबलि चढ़ाए।

शमूएल सात दिन के नियत समय पर उपस्थित नहीं हुआ, दूसरी ओर शाऊल की ओर से कुछ लोग तितर-बितर होने लगे। इस अस्पष्ट स्थिति में, शाऊल ने गलत निर्णय लिया। आदमियों को तितर-बितर होते देखकर, उसने खुद को होमबलि चढ़ाने का परीक्षण करने के लिए रखा होगा कि क्या वह उस पर निर्भर है। लेकिन ईश्वर पर भरोसा करने और उस पर विश्वास करने के बजाय, उसे अपनी बुद्धि और शक्ति पर भरोसा करते हुए अच्छा लग रहा था, लेकिन परमेश्वर की नजर में अनैतिक था। और इस प्रकार, परमेश्वर का क्रोध उस पर और उसकी पीढ़ियों पर था, कि वे फिर से राजा के शासन को सहन नहीं कर सकते। इस्राएल यहोवा का देश है। इस बात में अंतर है कि दूसरे राजा अपने देशों पर कैसे शासन करते हैं और कैसे इस्राएल का राजा इस्राएल

पर शासन करता है। इस्राएल के राजा को यहोवा पर विश्वास करना चाहिए, केवल उसी पर भरोसा करना चाहिए और उसके वचनों का पालन करना चाहिए। तभी वह देश को प्रभु के मार्ग पर ले जा सकता है अन्यथा देश की कोशिश प्रभु से अलग हो जाएगी। केवल जब हम अपने परमेश्वर-प्रदत्त कार्य, परिवार, सेवकाई, और अध्ययन में प्रभु पर भरोसा करते हैं, उस पर विश्वास करते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, तभी हम परमेश्वर के कार्यों को पूरा करने में सक्षम होंगे।

अगर हम पूरी तरह से अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं तो हम असफल होंगे और निराश होंगे। “अपना मार्ग यहोवा को सौंप दे, उस पर भरोसा रख, तो वह ऐसा करेगा” (भजन संहिता 37:5)

वह विफल रहा जिसे विनाश की आवश्यकता है नष्ट करने के लिए,

हालाँकि उनकी पीढ़ी को उनकी गलतियों के कारण राज्य के शासन से वंचित रखा गया था, लेकिन उनके पास अपने शासन को सफलता के साथ समाप्त करने का अवसर था। लेकिन वह ऐसा करने में असफल रहे। यहोवा ने उसे इस्राएल के शत्रु अमालेकियों को पूरी तरह नष्ट करने की आज्ञा दी। (1 शमूएल 15:3)। लेकिन शाऊल और उसके लोगों ने पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। वे पूरी तरह से नष्ट करने को तैयार नहीं थे। उन्होंने सभी अमा लेक्सियों को मार डाला, लेकिन भेड़ों और मवेशियों में से सर्वश्रेष्ठ को बख्शा। (1 शमूएल 15:9)।



हालाँकि शाऊल ने कहा कि वह उन्हें यहोवा के लिए बलिदान करने के लिए लाया था। जब शाऊल ने इस्राएलियों की सुनी और उन्हें प्रसन्न करने का प्रयत्न किया, तब यहोवा ने उसे अस्वीकार कर दिया। परमेश्वर ने शाऊल से केवल आज्ञाकारिता की अपेक्षा की। लेकिन हर स्थिति में परमेश्वर को अपना पहला स्थान दिए बिना उन्होंने लोगों की बात सुनी और अपना उद्देश्य और राज्य खो दिया।” प्यार करने वाले नौजवान! यद्यपि हम बचाए गए और अभिषिक्त हैं, क्या हम कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हैं या पुरुषों की सलाह का पालन कर रहे हैं? सोचिए और तय कीजिए कि आप में पुनरुत्थान के पीछे क्या कारण है? अपने आप को जाँचें और अपने

अभिमान, अवज्ञा, या सांसारिक दलील जैसी चीजों पर कार्य करें, यह सुनिश्चित करता है कि विनाश की आवश्यकता है। जब आप ऐसे काम करते हैं और परमेश्वर की ओर फिरते हैं, तो आपको पुनरुत्थान में एक हिस्सा दिया जाएगा।

”क्या यहोवा होमबलि और मेलबलियों से प्रसन्न होता है, जितना कि यहोवा आज्ञा मानने से प्रसन्न होता है? आज्ञा मानना बलिदान से उत्तम है, और ध्यान रखने में मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है।” (1 शमूएल 15:22)

यीशु छुड़ाते हैं



**YOUTH
WORLD**



You Tube



**Comforter
DIGITAL CHANNEL**

प्रत्येक शनिवार सथियम टीवी पर सुबह 6:30 बजे
और सुबह 7 बजे यूट्यूब और कंफर्टर टीवी पर

प्रिय युवाओं
अपने मित्रों को इस कार्यक्रम से परिचित करवाएं
और नीचे दिए गए नंबर पर हमें अपने द्वारा प्राप्त की गई
आशीर्षों के बारे में बताएं
9750955548





मसीह में मेरे प्यारे भाइयों और बहनों! आप यीशु मसीह को थामे रहें और अच्छे स्वास्थ्य और सभी सांसारिक आशीर्वादों के साथ अपने जीवन की यात्रा में आगे बढ़ते रहें। आइए हम इस महीने के लेख में उतरें, जिसका शीर्षक है “लक्ष्य” हम सभी के जीवन में लक्ष्य होते हैं: कुछ के लिए, यह सिर्फ एक हो सकता है और दूसरों के लिए, कई हो सकते हैं। हम में से कुछ एक प्रसिद्ध बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करने की इच्छा रख सकते हैं। कुछ अन्य लोग खेल, चिकित्सा या अन्य क्षेत्रों में महान ऊंचाइयों को प्राप्त करने का इरादा कर सकते हैं। विशिष्ट होने के लिए, प्रत्येक दिन छोटे लक्ष्यों को प्राप्त करने से भरा होता है।

उदाहरण के लिए, हर सुबह नियत समय के भीतर अपने स्कूल, कॉलेज या काम के लिए तैयार होना एक लक्ष्य बन जाता है। इसलिए, हम जागते हैं और एक निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने सभी दैनिक कार्य एक मन के साथ करते हैं।



ये छोटे-छोटे लक्ष्य हमारे जीवन में स्वतः ही निर्धारित हो जाते हैं। और इसलिए, हमारी गतिविधियाँ उसी के अनुसार निर्धारित की जाती हैं। कुछ लक्ष्य हमारे द्वारा निर्धारित किए जाते हैं, कुछ स्वचालित रूप से निर्धारित होते हैं। मेरे प्यारे दोस्तों, लक्ष्य निर्धारण का हमारे जीवन पर कई सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह हमारे जीवन का मार्गदर्शन करता है, महान ऊंचाइयों को प्राप्त करने की इच्छा देता है, कार्य को पूरा करने की भावना देता है, कभी हार न मानने वाला, सक्रिय दिमाग देता है। लक्ष्य रखने से व्यक्ति कड़ी मेहनत करता है, अच्छी योजना बनाता है, अनुशासित और आत्म-नियंत्रित होता है। लेकिन बिना लक्ष्य वाले व्यक्ति के पास

कौन से चरित्र होते हैं? जैसे सूखे गिरे हुए पत्ते हवा से दूर चले जाते हैं।

उसके पास कोई दिशा, आधार या अनुशासन नहीं है और वह क्षणभंगुर सुखों को महत्व देता है। हमने लक्ष्य निर्धारित करने के महत्व को देखा है - हमारे जीवन में और बिना लक्ष्य वाले पुरुषों के भयानक जीवन में। आगे हम देखेंगे कि लक्ष्य निर्धारण में बाइबल किस प्रकार हमारी अगुवाई करती है। हर किसी के लिए एक उद्देश्य है जो परमेश्वर द्वारा बनाया गया है। परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करते हुए हमने अपने जीवन की यात्रा में कई लक्ष्य निर्धारित किए।

प्रत्येक विश्वासी के लिए परमेश्वर द्वारा दिया गया उद्देश्य एक ऐसा जीवन जीना है जो उसे प्रसन्न करे, उसकी आराधना करे और परमेश्वर के लिए सारी प्रशंसा और महिमा लाए।

आइए हम बाइबल से कुछ उदाहरण देखें। आइए पहले हम प्रेरित पौलुस के जीवन को देखें। वह कहता है, “भाइयों मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ; लेकिन एक काम मैं करता हूँ: जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलकर आगे की ओर बढ़ते हुए, मैं पुरस्कार जीतने के लिए लक्ष्य की ओर बढ़ता हूँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में स्वर्ग की ओर बुलाया है” (फिल 3:13,14)। परमेश्वर द्वारा पौलुस का सामना करने के बाद, वह अन्यजातियों में सुसमाचार फैलाने के अपने लक्ष्य में बहुत दृढ़ था। वह यह भी घोषित करता है - “हर कोई जो खेलों में प्रतिस्पर्धा करता है। सख्त प्रशिक्षण में जाता है। वे ऐसा ताज पाने के लिए करते हैं जो टिकेगा नहीं, लेकिन हम ऐसा ताज पाने के लिए करते हैं जो हमेशा के लिए रहेगा” (1 कुरिन्थियों 9:25),

प्रिय मित्रों, आइए अपने जीवन का उद्देश्य जानें और उसे प्राप्त करने के लिए लक्ष्य निर्धारित करें।

दूसरे, आइए हम अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के जीवन को देखें। वह अपने लिए अपने प्रभु के उद्देश्य को पूरा करने के लिए इस दुनिया में रहा। वह अपने सूली पर चढ़ाए जाने के माध्यम से मानव जाति को परमेश्वर के साथ मिलाने के एकमात्र इरादे के साथ रहता था। बाइबल कहती है, “विश्वास के सिद्ध करनेवाले यीशु पर अपनी दृष्टि लगाओ। उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, उस ने क्रूस को सह्य और उसकी लज्जा को ठुकराई, और परमेश्वर के सिंहासन के दहिने जा बैठा” (इब्रानियों 12:2) प्रिय मित्रों, यीशु अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बहुत दृढ़ थे। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्हें कई संघर्षों से गुजरना पड़ा। इसी तरह हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी यात्रा में दृढ़ रहना

चाहिए, और उस उपहार को प्राप्त करना चाहिए जो परमेश्वर ने हमारे लिए नियत किया है। इस सफर में हम अकेले नहीं हैं दोस्तों। परमेश्वर हमारे साथ हैं और उनके कई बच्चे हमारे साथ यात्रा कर रहे हैं। बहुत से लोग जिन्होंने अपने लक्ष्य हासिल कर लिए हैं, हमारे लिए उदाहरण के रूप में खड़े हैं। “इसलिये जब हम गवाहों के ऐसे बड़े बादल से घिरे हुए हैं, तो हम सब कुछ जो बाधा डालता है, और उस पाप को जो बड़ी आसानी से उलझा देता है, दूर कर दें। और उस दौड़ में जो हमारे लिये ठहराया गया है, धीरज से दौड़ें” (इब्रानियों 12: 1) यह हमें विश्वास और आनंद देता है। तो,

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों! इस दिन से, अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य को जानें और इसे प्राप्त करने के लिए काम करना शुरू करें। आमीन

फादर्स डे

एक पिता वह होता है जो अपने परिवार के कल्याण के लिए अपनी मेहनत और प्यार का त्याग करता है। पिता ही हमारे लिए अच्छे मार्गदर्शक, मित्र और शिक्षक हो सकते हैं। पिता वह है जो इतनी मेहनत करता है और अपनी जरूरतों, इच्छाओं और वरीयताओं का त्याग करता है। ऐसे पिता के निस्वार्थ प्रेम का जश्र मनाने के लिए हर साल जून महीने के तीसरे रविवार को फादर्स डे मनाया जाता है। बहुत से लोग नहीं जानते कि पिता दिवस कैसे मनाया जाए और ऐसे विशेष दिन पर अपने पिता को कैसे खुश किया जाए। तो यहां आपके लिए इस फादर्स डे को मनाने के लिए कुछ सुझाव दिए गए हैं।

एक पूरा दिन बिताएं

आप उस दिन अपने पिताजी को उनके दोस्तों के घर ले जा सकते हैं या फिर आप उन्हें अलग जगह पर ले जा सकते हैं और उन्हें दिखा सकते हैं।

खाना पकाएं और जश्र मनाएं

यदि आप कर सकते हैं तो उसके साथ 5-सितारा व्यंजनों का व्यवहार करें। या फिर आप उसे वह खाना बना सकते हैं जिसे वह अपने हाथ से खाना पसंद करता है।

उपहार दें

आप उसे उसके पसंदीदा रंग की शर्ट खरीद कर उसे भेंट कर सकते हैं। या आप जूते, घड़ी और पर्स जैसी कोई चीज़ खरीद कर उसे दे सकते हैं

अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखें

सब्जियां, फल और उसी के साथ पकाएं। इसे करने पर विचार करें, खासकर यदि आपके पिता दवा ले रहे हों

उनसे रोजाना एक घंटे बात करें

अपने पिता से रोजाना एक घंटे अच्छी और बुरी चीजों के बारे में बात करें। जो उस विशेष दिन हुआ था और कृपया उस पर उसकी सलाह लें विशेष बात

